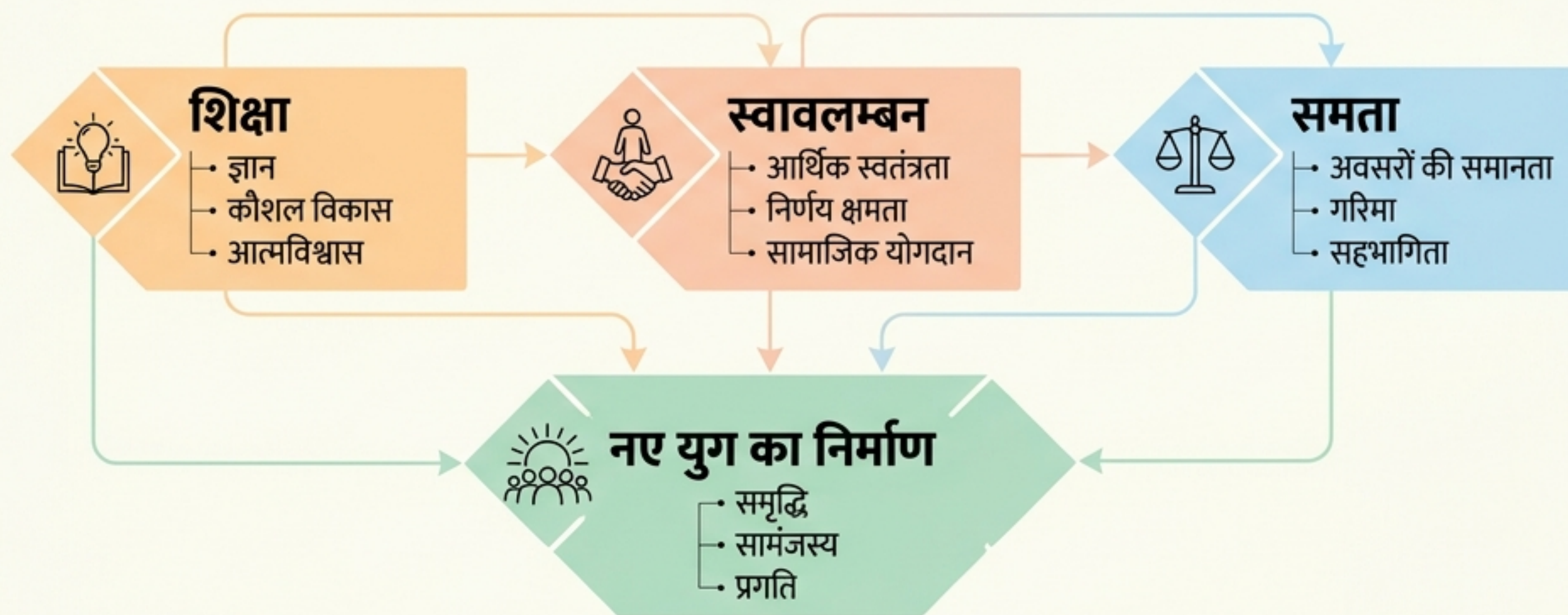




महिला जागृति: नए युग की रूपरेखा

शिक्षा, स्वावलम्बन, और समता का वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक मार्ग



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में मेरे क्रंतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

क्रान्ति के चार प्रमुख स्तम्भ

१. वैचारिक क्रान्ति (अध्याय ९)

दुश्चिन्तन का उन्मूलन और सृजन की ओर दिशा परिवर्तन।

२. व्यावहारिक क्रान्ति (अध्याय १०)

शिक्षा का विस्तार और आर्थिक स्वावलम्बन का तंत्र।

३. पारिवारिक क्रान्ति (अध्याय ११-१२)

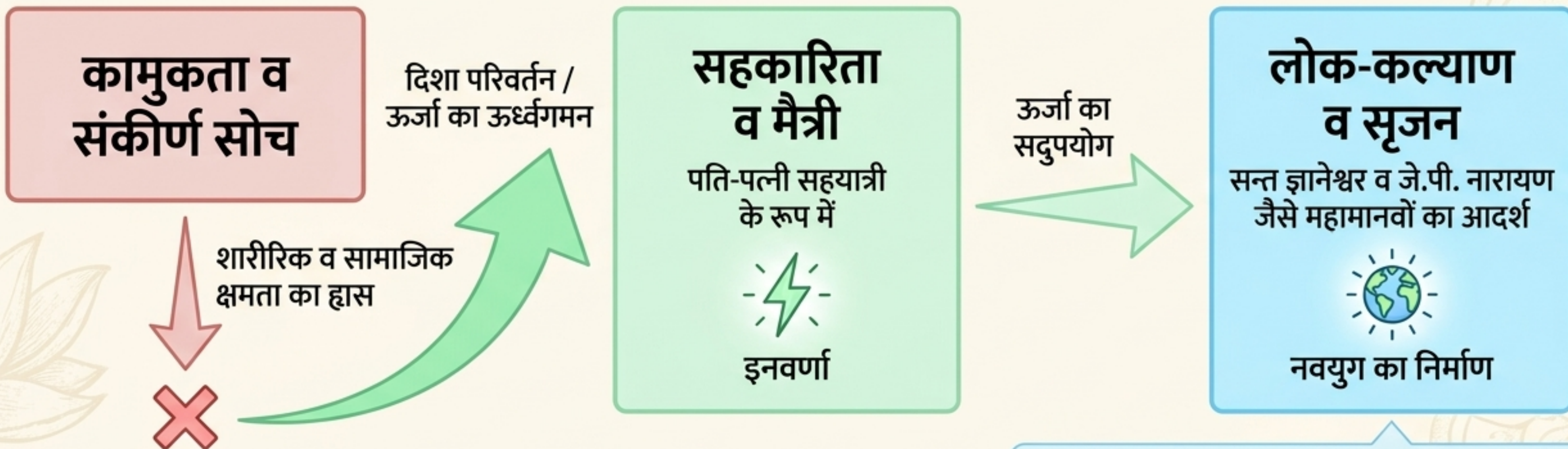
समानता, सहकारिता और नारी अवमूल्यन पर वैधानिक व सामाजिक रोक।

४. वैश्विक क्रान्ति (अध्याय १३)

जनसंख्या नियंत्रण और युग-धर्म का वैज्ञानिक पालन।

जागरण
का ब्लूप्रिंट

वैचारिक परिवर्तन: दुश्चिन्तन हटाएँ — सृजन अपनाएँ



वैज्ञानिक तथ्य: अश्लील और संकीर्ण चिन्तन से बौद्धिक और मानसिक क्षमताओं का सर्वनाश होता है। यह ऊर्जा का सबसे बड़ा अपव्यय है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समय का नियोजन: हर वर्ग की महती भूमिका



नौकरीपेशा महिलाएँ

ईश्वर की नौकरी मानें।
परिवार में प्रगतिशीलता
बोना और सहकर्मियों को
प्रेरित करना।



गृहणियाँ व सेवानिवृत्त

खाली समय का सदुपयोग।
प्रौढ़ शिक्षा व मोहल्ले में
नवजागरण का नेतृत्व।



विधवाएँ व परित्यक्ताएँ

दुर्भाग्य का रोना रोने के बजाय
साहसिक ईश्वरीय कार्य
(समाज सुधार) में समय देकर
दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलें।

प्रथम कदम: शिक्षा का विस्तार (Multiplier Effect)



शिक्षा केवल नौकरी प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि यह वह अस्त्र है जो स्वतंत्र विचार, समानता और नवजागरण का मार्ग प्रशस्त करता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ गुरुदेव पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



आर्थिक परावलम्बन ही नारी अवमूल्यन और हीन भावना का मुख्य कारण है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच फैलना ही ज्ञान शरीर ही जिन्दा और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब मेरे ज्ञान-शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

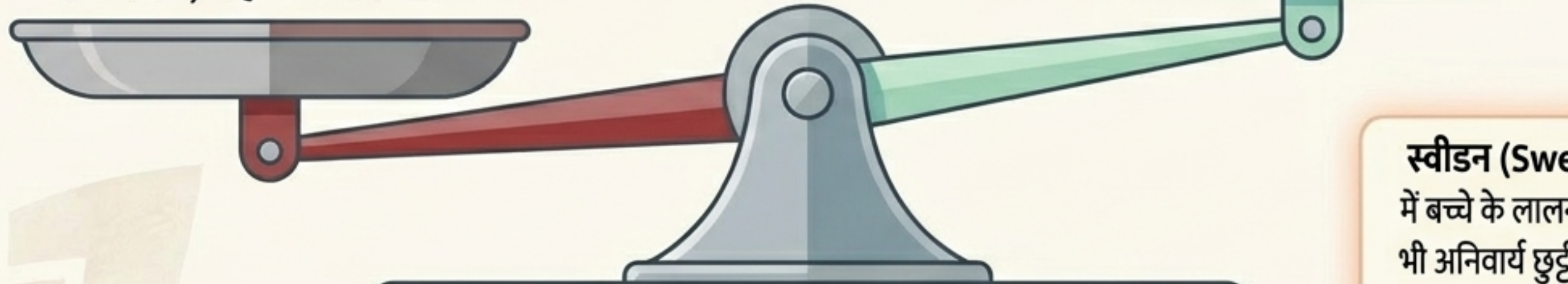
नारी-अवमूल्यन पर रोक: लालन-पालन का वैज्ञानिक मॉडल

असंतुलित - पुरानी मान्यता

सारा भार केवल माँ पर।
परिणाम: स्वास्थ्य ह्रास, करियर में
रुकावट, पहचान का खोना

संतुलित - प्रगतिशील मान्यता

पिता की समान भागीदारी
(Shared Parenting)।

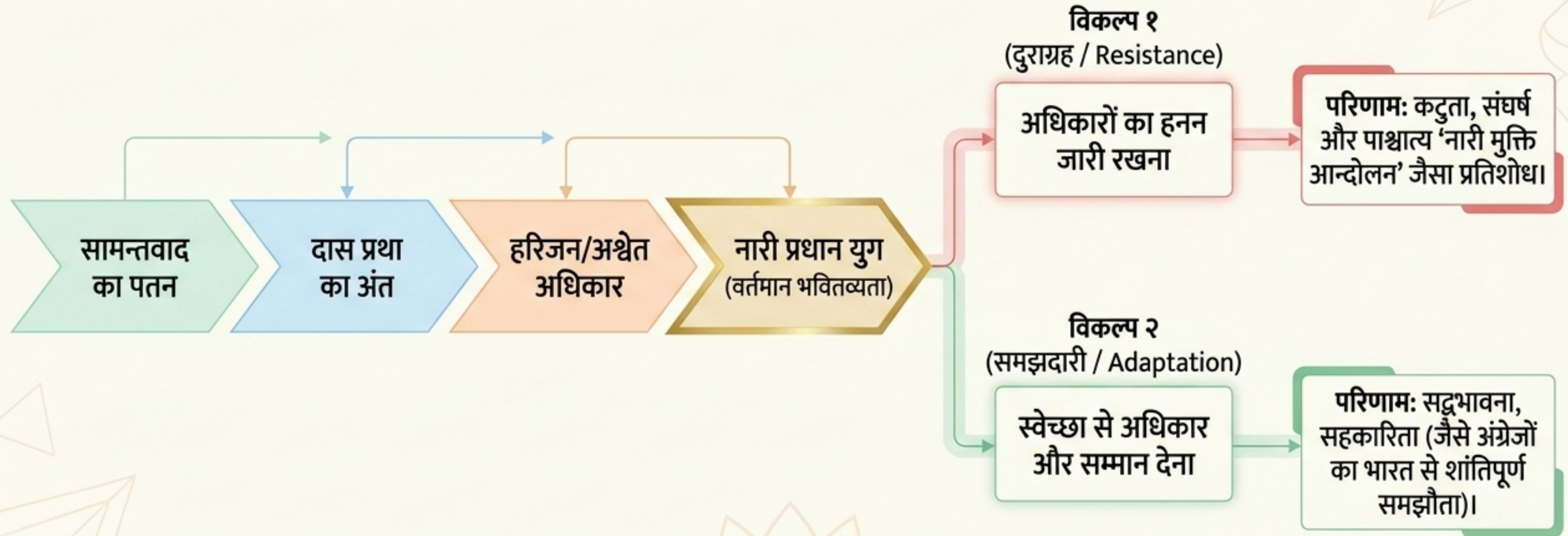


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आवसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयों।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

स्वीडन (Sweden) मॉडल: स्वीडन में बच्चे के लालन-पालन के लिए पुरुषों को भी अनिवार्य छुट्टी और समान जिम्मेदारी का वैधानिक प्रावधान है। यदि उत्पादन में दोनों साझीदार हैं, तो पोषण में भी समान जिम्मेदारी वैज्ञानिक और नैतिक आवश्यकता है।

वसंत पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समय की माँग: समता का अटल परिवर्तन



एकता और समता: दाम्पत्य की नई परिभाषा

	पुरानी मान्यता	नई मान्यता
दृष्टिकोण	स्वामी और दासी / क्रीतदासी।	भाई-बहन जैसी पवित्र मैत्री व समान सहयात्री।
उद्देश्य	मात्र सन्तानोत्पादन व कामुकता की तृप्ति।	एक-दूसरे का उत्कर्ष और लोक-कल्याण में साझीदारी।
अधिकार	असमानता व पक्षपातपूर्ण भेदभाव।	एक ही सिक्के के दो पहलू (पूर्ण समानता)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर धाँ वेहिएर्षी से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगगुरु ऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

संयम का विज्ञान: ऊर्जा का ऊर्ध्वगमन



युगसन्धि का वैज्ञानिक तर्क:

जिस प्रकार सूर्य या चंद्र ग्रहण के समय विशेष संयम बरता जाता है, वैसे ही ‘युगसन्धि’ की इस वेला में बहुप्रजनन और कामुकता से बचना चाहिए, ताकि सूक्ष्म जगत की ऊर्जा का सदुपयोग हो सके।

प्रजनन पर रोक क्यों? (वैश्विक संकट का विश्लेषण)



असीमित
जनसंख्या

पर्यावरण प्रदूषण
और संसाधन संकट

नारी के स्वास्थ्य व
क्षमताओं का विनाश

माता-पिता पर 20 वर्ष
आर्थिक सजा/ महँगाई

सूक्ष्म जगत में
असंतुलन

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

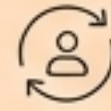
निष्कर्ष: प्रगति के सभी प्रयास विफल

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” —
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

दायित्व का पुनर्मूल्यांकन: अपनी विरासत क्या हो?



सामान्य मार्ग



नई संतान पैदा करना → अगले २० वर्ष तक केवल एक छोटे परिवार के पोषण में अपनी समस्त ऊर्जा नष्ट करना।



युग-धर्म मार्ग



प्रजनन पर पूर्ण विराम → बुद्धकाल के परिव्राजकों की तरह विश्व-परिवार के वर्तमान सदस्यों को अपना मानकर उनके उत्थान में जीवन लगाना।

वैज्ञानिक सत्य: इस सदी में अणुयुद्ध और प्रदूषण से भी बड़ी विभीषिका ‘जनसंख्या-वृद्धि’ है। इस पर रोक लगाना ही मानवता की सबसे बड़ी रक्षा है।

व्यावहारिक समाधान: शान्तिकुञ्ज का मार्गदर्शन

हिमालय से जिस प्रकार नदियाँ निकलती हैं, उसी प्रकार शान्तिकुञ्ज से नारी-जागरण की नव-चेतना का संचार हो रहा है।

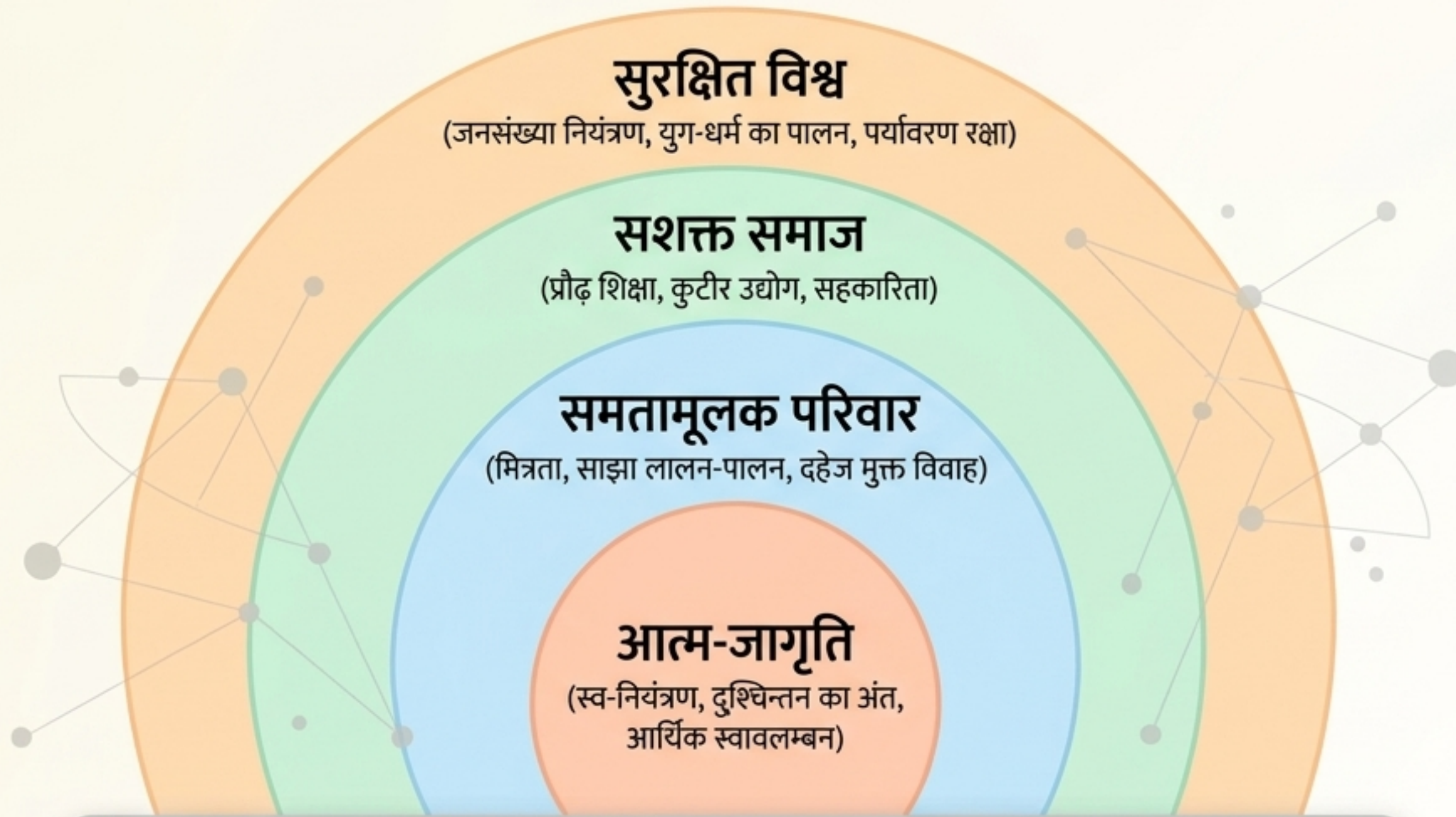
प्रशिक्षण: 9 दिवसीय या 1 माह के नारी-जागरण प्रशिक्षण सत्र (शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार) में भाग लेकर दिशा प्राप्त करना।

आदर्श विवाह: जो विवाह अनिवार्य हों, उन्हें दहेज, जेवर और खर्चीली धूम-धाम से सर्वथा रहित सम्पन्न करना।

प्रतिज्ञा: अपने बच्चों (विशेषकर लड़कों) की शादियों में अनावश्यक खर्च और आडंबर न करने का कठोर संकल्प लेना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

निष्कर्ष: एक समर्थ नारी, एक नया विश्व



नारी समस्या का समाधान केवल एक सामाजिक सुधार नहीं,
बल्कि संपूर्ण विश्व के कायाकल्प का एकमात्र वैज्ञानिक आधार है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश “मेरा ज्ञान शरीर ब ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर में आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से ज्ञान जन तक मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आह्वान: युग की पुकार

- ✓ भ्रांतियों और मूढ़ मान्यताओं का साहसपूर्वक निराकरण करें।
- ✓ लड़का-लड़की और पति-पत्नी में हर प्रकार का भेदभाव तत्काल समाप्त करें।
- ✓ क्रान्तिधर्मी साहित्य पढ़ें, पढ़ाएँ और ज्ञान-रथ का विस्तार करें।
- ✓ नवजागरण अभियान में अपना समय, श्रम और प्रतिभा दान करें।

**आधी दुनिया का कल्याण ही विश्व-कल्याण की कुंजी है।
उठें और नवयुग के सृजन में भागीदार बनें।**

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)